ओम शांति,
हम सभी परमातम पालना में पल रहे है। बाबा के प्यार ने जीना ही सिखा दिया देखो कितनी बड़ी बात, संसार में लोग जी तो रहे है पर जीवन में सुख नहीं मिल रहा है। बाबा ने हमें प्यार दे कर यह प्यार ऐसा है जैसे अमृत के छीटे डाल दिए, वैसे भी प्यार ऐसी ही चीज है किसी तड़पती हुई आत्मा को सच्चा प्यार मिल जाए तो वोह तृप्त हो जाती है।
हम सब को मिला परमातम प्यार, मिला या नहीं? माताओं कि गर्दन नहीं हिल रही है सोच रही है पता नहीं यह प्यार क्या होता है, मिला? किन्हे मिलता है यह प्यार? किन्हे मिल सकता है यह प्यार? सोचना है। देखो बाबा बहोत अच्छी बात कहते आये है **जो बच्चे सुखदाई है वोह मेरे प्यार के पात्र है, जो जितने देह से न्यारे वोह उतना ही परमातम प्यार के पात्र है।** हम सभी को यह अधिकार मिला है।
बाबा कि मुरलियां स्वमान पर बहोत चल रही है और एवर रेडी कि बाबा ने बहोत अच्छी परिभाषा दे दी हर बार हम सुनते आते है अचानक, एवर रेडी और लम्बा काल। एवर रेडी कि बहोत अच्छी परिभाषा दे दी याद करलें आप सभी जरा - **संकल्प किया स्वमान और वरदान का और एक सेकंड में उसके स्वरुप बन गए यह है उन आत्माओ कि निशानी जिन्होंने अपने को तैयार कर लिया है** किस काम के लिए? एक ही बात सब के ख्याल में आती है कि घर जाने के लिए। लेकिन बात केवल घर जाने कि नहीं है पिछली मुरलियां में एक बहोत राज भरी बात बाबा केह आये है संसार में दुःख बढ़ रहा है देखो भगवान् के सब बच्चे है जब वोह अपने बच्चो को चिल्लाते हुए, दुखो में देखता होगा ऊपर से तो क्या होता होगा उसको? बाप है ना वोह? उसके पास मातपिता का दिल है, निराकार होते हुए भी मातपिता कि फीलिंग्स है ना? तो उसने कहा है **जब तक तुमने सभी आत्माओ को दुखो से मुक्त नहीं किया तुम मुक्तिधाम नहीं जा सकोगे। अपने कर्तव्य पूर्ण किये बिना हम वहाँ नहीं जा सकेंगे।** तो हमें एव्री रेडी केवल घर जाने के लिए नहीं होना है संसार को देने के लिए। आपको भी दीखता हो मुझे तो बहोत दीखता है क्यूंकि ऐसी फ़ोन आते है समाचार आते है आत्माओ को मानसिक कष्ट बढ़ता जा रहा है, मन सभी का निर्बल होता जा रहा है। बाबा कहा करते है यह तुम्हारे वर्त्तमान दुःख तो कुछ भी नहीं है दुखो के पहाड़ गिरेंगे। **ऐसे में हम सब को रेडी होना है संसार को बहोत कुछ देने के लिए।** बोलो माताएं होंगी? अपने परिवार को तो सभी देते है संसार को देना है **और दे वही सकेंगे जो सभी खजानो से भरपूर हो।** सीधी से बात है जिनके पास सब कुछ होगा वही देंगे बाकी तो लेने वाले रेह जायेंगे।
तो हम अपने को स्वमान और वरदान में जल्दी से जल्दी स्थित कर सकें इसको अपना लक्ष्य बनालें। यह दोनों ही बात योग कि ही है कोई यह ना सोचें यह बाबा ने पीछे कुछ कहा, फिर कुछ कहा अब और कुछ केह दिया क्या क्या करें यह सब एक ही है। स्वमान और वरदान कि साधना हमें निराकारी और फ़रिश्ते स्वरुप में सहज ही स्थित कर देती है। बाबा ने दूसरी मुरली में कहा में आत्मा करावनहार हूँ और मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, मालिक हूँ इन शक्तियों पर मेरा अधिकार है इस फिलिंग में स्वमान का अभ्यास हमें सहज ले आता है। **बाबा ने हर एक अपने बच्चे को वरदान दिया है उस वरदान को हमें फलीभूत करना है** बाबा ने येही शब्द बोले अभी एक सेकंड में वरदान को फलीभूत करके अनुभवी मूर्त बनो। हमें वरदान मिले है, सब को मिले है **कौनसा वरदान किसके लिए वरदान बन गया है यह इस बात पर निर्भर करेगा के किस वरदान को हम अपने लिए वरदान स्वीकार करलें।** वरदानो को स्वीकार करना उसके नशे में आजाना इस फिलिंग में रहना यह वरदाता से मुझे वरदान प्राप्त है। वरदान माना होगा ही वोह सहज रूप से काम करेगा उसमें कोई कठनाई नहीं होगी, मेहनत नहीं होगी।
आज हम इस्पे ही चर्चा करते है। हमें स्वमान को वरदान बनाना है और अपने को स्वमान में स्थित करना है सभी बाबा के द्वारा बताये गए स्वमान को जानते है। कोई जानते है कोई नहीं जानते है क्यूंकि ऐसी बहोत आत्माएं निकली है जिनसे यदि हम पूछते है कि स्वमान क्या होता है? तो उन्हें इतना ही पता है में आत्मा शांत स्वरुप हूँ, बस,

इसके आलावा कुछ नहीं पता है। यह तो आत्मा कि एक क्वालिटी है केवल। स्वमान बहोत बड़ी चीज है जिसको **बाबा ऐसे कहते थे तुम्हारे ज्ञान कि शुरुआत भी इसी से हुई कि में कौन हूँ? और ज्ञान कि समाप्ति भी इसी से होगी कि में कौन?** अंतर हो जाएगा लम्बी साधनाओ कि बाद एक अंतर हो जाएगा। **शुरुआत हुई में आत्मा हूँ शरीर नहीं हूँ, शरीर से अलग हूँ अंत होगा में कौनसी आत्मा हूँ?** समजते चलें सभी हमें इस स्वरुप तक पहोंचना ही है कि हम अपने को सम्पूर्ण रूप से जान लें, में कौनसी आत्मा हूँ? इस सृस्टि चक्र में मेरा कौनसा हीरो पार्ट है? वर्त्तमान समय में मेरे पास क्या क्या शक्तियां और क्या क्या वरदान है? ध्यान देंगे इन शब्दो पर हमें स्वयं को पहचानना है अपनी शक्तियों को, अपने वरदानो को, अपनी जिम्मेदारियों को। हम क्या क्या कर सकते है? कौन कौनसे अधिकार ऑलमाइटी अथॉरिटी से हमें मिल चुके है? जो बाबा बार बार हमें रेअलाइस करा रहे है पहचानो अपने को किसने तुम्हे अथॉरिटी दी है? इस्पे हम अपने अंदर इस फिलिंग को लाया करें और पहचाने मुझे सर्व शक्तिवान से यह यह अधिकार मिल चुके है। बहुतो को इसकी पहचान नहीं है, यह पहचान समय लेती है चिंतन करें, मुरलियों का अध्ययन करें बाबा क्या केह रहा है? जब वोह कहता है बाबा कि बहोत चीजे देखें हाव भाव देखा करें, कितना प्यार है उसके पास हम आत्माओ के लिए। वोह क्या कर देना चाहता है हमारे लिए, वोह हमें कहाँ ले जाना चाहता है, उसकी भावनाओ को समज लें।

परमातम प्यार को समज कर यदि हम उसके प्यार का सही उतर देंगे तो उसका ना केवल प्यार बढ़ता जाएगा लेकिन अनेक शक्तियां और वरदान भी हमारे पास आजायेंगे। तो महसूस करलें, जानलें मेरे पास क्या क्या शक्तियां है, कौन कौन से वरदान है, वरदान तो रोज भी मुरलियां में आ रहे है सिर्फ स्वीकार करना है बाबा ने भी अव्यक्त में भी बहोत बातें कहीं है। में आपसे कहूंगा कम से कम कोई एक वरदान अपने लिए ले लें उस पर बहोत अच्छा अभ्यास करेंगे जैसे में एक उदाहरण दे देता हूँ आप स्वीकार करलें बाबा ने मुझे वरदान दिया में विघ्न विनाशक हूँ, ऐसा चित्र बनाएं कि बापदादा मेरे सामने है जो और सीन नहीं बना सकते वोह यह सीन बना लें जब अव्यक्त बाबा आते है बाबा बड़े हॉल में आये हुए है मुझे बाबा ने बुला दिया, में स्टेज पर बाबा ने हाथ रख दिया सर पर और कहा बच्चे बाप वरदान देते है तुम विघ्न विनाशक हो। तुम संकल्पो से, दृस्टि से, अपने चरण कहीं डाल कर दूसरे के विघ्न नष्ट कर सकोगे यह तुम्हे वरदान देते है। अब सोचलें सभी। ऐसे आप चुन लें कोई भी एक, कम से कम एक सारे ले लें तो बहोत अच्छा।

सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, में प्रकृति कि मालिक हूँ, प्रकृति हमारे आदेश का पालन करेगी क्यूंकि हम उसके मालिक है यह स्वमान भी है और इसको हम वरदान रूप में ग्रहण कर लें। अब आवस्यकता इस चीज कि है कि जो वरदान हम स्वीकार करते है उसको हम रोज सवेरे इसी तरह अपने को याद दिलाएं - बाबा का हाथ सर पर है और बाबा वरदान दे रहे है बच्चे तुम विघ्न विनाशक हो, तुम्हे संसार के विघ्नो को नष्ट करना है। कुछ माताएं यह सोच रही है कि ऐसा हो सकता है क्या? हो सकता है? बताए रंगीन कपड़ो वाली माताएं? सोच रही है वोह। ऐसा ही होगा। फिर हम इसको प्रैक्टिकल फलीभूत करने लगे, प्रयोग करें इसका, कैसे करेंगे? आप के पास कोई आता है कहता है भाई यह समस्या हो गई है बहोत आप योग अभ्यास करें, अपने को योगयुक्त करें, उसे दृस्टि दें, आत्मा देखें यह आवश्यक है, संकल्प करें इसकी यह समस्या समाप्त हो जाएँ और प्रभाव देखें। करें ऐसा धीरे धीरे। कहीं दूर आपको किसी ने बताया कि हमारे पास यह समस्या चल रही है यह विघ्न चल रहा है दूर है वोह हमारे सामने नहीं है जिन्हे दृस्टि दी जा सके अपने को स्थित करें में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ दूर से ही दृस्टि डाल कर संकल्प करें इनका यह विघ्न नष्ट हो जाएँ और परिणाम देखें। फलीभूत करेंगे हम वरदानो को यह अनुभव धीरे धीरे बढ़ते जायेंगे, अपना रंग दिखाएंगे और हम अनुभव कि अथॉरिटी बनते जायेंगे हमें स्वयं में विश्वास होता जाएगा कि हम संकल्प शक्ति से, दृस्टि कि शक्ति से, अपने स्वमान कि शक्ति से, योगयुक्त होकर किसी के भी विघ्नो को हर सकते

है। ऐसे कोई भी एक वरदान आप लें ले।

आने वाला समय हम सभी को हमारे कर्तव्य कि याद दिलाएगा में क्यूँ यह केह रहा हूँ? जब संसार में हाहाकार होने लगेगा तब आत्माएं हमारे द्वार पर आएगी कि हमें शांति दो, तब हम यह नहीं कहेंगे कि राजयोग सिखलो, आओ प्रदर्शनी समझा देते है यहाँ ज्ञान ले लो, वोह कहेंगे ज्ञान हमारी बुद्धि में नहीं हमें तो शांति दो। उस समय जिन्होंने अपना जीवन लम्बा काल शांति में बिताया है, अपने को अशांत नहीं किया है, अपनी शांति को डिस्टर्ब नहीं होने दिया है, जिन्होंने दूसरे के लिए अपने चित में शुभ भावनाएं भरी है, साइलेंस पॉवर जमा कि है बस वोह दृस्टि देंगे, वाइब्रेशन्स देंगे, संकल्प करेंगे इनका चित शांत हो जाएँ तो चित शांत होने लगेगा। जो भी आप में से यह महान सेवा करना चाहे वोह अभी से अपने को तैयार करें। **हमें बड़े बड़े काम करने है एक बड़े काम कि में आपको याद दिलाना चाहता हूँ - बाबा यह कहते है कि सब को सन्देश दो लेकिन दो धर्म इस घरती पर ऐसे है जिनमें बहोत कट्टरता है वोह हमारे सन्देश को सुनते नहीं है वोह कहेंगे यह तो हिन्दुओ का है यह हमारा नहीं है। मुस्लिम धर्म और क्रिश्चियन धर्म। लेकिन सन्देश तो उन्हें भी बाबा का देना है केवल सन्देश देने से काम नहीं हो जाएगा क्यूंकि सभी आत्माओ को मुक्ति में ले चलना है, मुक्ति बाबा का वर्सा है सभी के लिए परन्तु वोह तब मिलेगा जब हर आत्मा एक बार दिल से स्वीकार करते हुए कहेगी मेरा बाबा। वोह मेरा है मेरा कहते ही मुक्ति तुम्हारी। अब आप सोचलें दो धर्मो कि मेने बात कहीं और भी कुछ छोटे छोटे कुछ धर्म है जो हमारी बात नहीं सुनेंगे लेकिन उन्हें मुक्ति का वर्सा तो दिलाना है ऐसे में यह दोनों धर्म आपको मालुम होना चाहिए फरिश्तो में बहोत विश्वास रखते है। सुना है ना? फ़रिश्ते। दोनों कि यह मान्यता है उनके धर्म पिताओं के द्वारा फरिश्तो ने ज्ञान दिया है उनका उनके फरिश्तो के नाम भी है उनमें।** तो फरिश्तो में उनको बहोत विश्वास है जैसे भारत में हिन्दू लोग किसी देवता के दर्शन करलें तो बलिहार हो जायेंगे ना? **यह दोनों धर्म अगर फरिश्तो का स्वरुप देख लें तो बस बलिहार हो जायेंगे स्वीकार कर लेंगे तो हमारे फ़रिश्ते स्वरुप द्वारा इन आत्माओ को सन्देश मिलेगा। सन्देश और यह स्वीकार करेंगे उसके बाद मेरा बाबा तो मुक्ति मिलेगी यह उनके द्वारा होगा जो फरिश्ता बनेंगे।** इस शरीर में रहते हुए फ़रिश्ते, शरीर छोड़कर फ़रिश्ते नहीं। जिन्होंने अपने को सम्पूर्ण लाइट कर दिया हो हल्का जो बाबा ने अभी कहा नॉलेज इस लाइट, ज्ञान लाइट भी है प्रकाश भी है यह हमारे अन्धकार को दूर करता है, हमारे विचारो को शुद्ध करता है, हम ऐसे रहने लगते है जैसे प्रकाश में रहने लगते है।

देखो छोटी सी बात पर ध्यान दें एक व्यक्ति अन्धकार में रहता हो अँधेरे में उसको सारे काम करने पड़ते हो हम समज सकते है वोह बहोत सारे काम कर भी नहीं पायेगा, उसे कुछ पढ़ना हो अँधेरे में नहीं होगा। बिलकुल उसके पास लाइट नहीं है करंट नहीं है अँधेरा ही अँधेरा है वोह बहोत थोड़े काम कर सकेगा भटक जाएगा कहीं गिर जाएगा और जो व्यक्ति प्रकाश में रेहकर काम करता हो जिसके पास लाइट भी करंट भी हो वोह बहोत सारे काम कर सकता है। ज्ञान प्रकाश है, हम प्रकाश में आ गए है, हम प्रकश में रहते हुए कार्य कर रहे है, प्रकाश के द्वारा हम अपने को डबल लाइट बना रहे है, हल्का कर रहे है, बंधनो को छोड़ रहे है और फरिश्ता बनने के लिए एक ही सब से बड़ी चीज है जिसकी बहोत आवश्यकता है वोह है - पवित्रता। जो आत्मा को बंधनो से मुक्त करती है, अपवित्रता ने ही तो बांधा है, हर मनुष्य को हर आत्मा को बांधा है अपवित्रता ने, ज्ञान का प्रकाश हमें इस बंधन से मुक्त कर देता है।

तो हमें बड़े बड़े काम करने है इसलिए वरदानी स्वरुप अपना बनाएं और स्वमान पर बहोत अच्छा अभ्यास करें। पता है माताओं को? स्वमान कौनसा देते है माताओ को? कौन हो तुम? शिवशक्ति और कौन हो? अधिकारी और? मास्टर सर्व शक्तिवान यह तो पक्का कर दिया है सब ने। भाइयों को कौनसा स्वमान देते है बाबा? वैसे तो सब को एक ही देते है फिर भी बोलो? तुम विश्व कल्याणकारी हो, मास्टर ज्ञान सूर्य हो, महावीर हो, पूर्वज हो, उध्धारमूर्त आधारमूर्त हो। इन स्वमानो का हम कैसे अभ्यास करेंगे? हम **एक स्वमान** ले लेते है आज - **तुम विश्व के आधारमूर्त और उध्धारमूर्त**

हो। तुम्हे विश्व का उध्धार करना है आत्माओ का उध्धार करना है, प्रकृति का भी कल्याण करना है, जिव जंतु पशु पक्षी सब का कल्याण तुम्हे करना है। पहले हम किसी भी स्वमान को लेकर उसपे चिंतन करेंगे हम आधार है, आधार यदि अच्छा ना होगा बिल्डिंग का? आधार माना नीव, अगर नीव कच्ची करदी जाए तो बिल्डिंग गिर जायेगी, जरा सा भी तूफ़ान हो जरा सा भी भूकम्प आ जाये तो गिर जायेगी। चिंतन करना है इस तरह - हम आधार है हम यदि कच्चे होंगे, हम यदि कमजोर होंगे तो संसार कि जो यह विशाल बिल्डिंग है यह हिलती रहेगी ना? लोग भयभीत रहेंगे गिर ना जाएँ। वैसे भी किसी बिल्डिंग वालें को पता हो कि हमारी नीव तो कच्ची है तो दर रहेगा ना? कभी भी हमारी बिल्डिंग गिर सकती है। **हम विश्व के आधार है हमें याद रखना है हमारी स्थिति ही विश्व कि स्थिति बनेगी हम हसेंगे तो? जग हसेगा, हम उदास हो गए तो?** बाबा बहोत अच्छी बात सिखाते आये है एक तो मोटी बात सिखाते आये है - **जैसा कर्म तुम करोगे तुम्हे देख कर और भी करेंगे।** हमें सारा संसार तो नहीं देखता फिर भी हमें सारा संसार फॉलो करेगा लेकिन इससे भी सूक्ष्म बात जैसा तुम सोचो गए वैसा ही सब सोचने लगेंगे।

हम संसार के **आधार है** और आधार जिम्मेदार होता है, हम ध्यान दें अपने ऊपर, हमारे संकल्पो का प्रभाव संसार पर पड़ रहा है, हम नेगेटिव सोचेंगे सब नेगेटिव हो जायेंगे। **सब अपने को जिम्मेदार समजें।** कई आत्माएं यह भी सोच सकती है भला मेरे सोचने से क्या होगा? में कुछ भी सोचु उससे क्या फर्क पड़ता है? लेकिन फर्क पड़ेगा। बाबा इससे ही जुडी हुई बहोत बड़ी बात कही है तुम पूर्वज हो, तुम्हारी स्थिति पर समय और संसार कि स्थिति का आधार है, तुम्हारा एक एक अच्छा संकल्प संसार कि सभी आत्माओ को बल देता है, कमजोर संकल्प सभी आत्माओ में कमजोरी पैदा करेगा। हम अपनी जिम्मेदारी को महसूस करें, हम अकेले नहीं है। हम अकेले नहीं है जो कुछ भी करें कुछ भी सोचें हम बहोत जिम्मेदार आत्माएं जिनके ऊपर पूरा कल्प वृक्ष खड़ा है, चित्र बनालें एक हमारे सर पर ही सारा कल्पवृक्ष स्थित है, हमारे ब्रेन में जो चिंतन चल रहा है, हमारे विचारो कि संकल्पो कि जो क्वालिटी है, जो उनका लेवल है, उसका सम्पूर्ण प्रभाव कल्पवृक्ष में पहोच रहा है। तो हम आधार है। मजबूत करें इस आधार को यह हमारी बहोत बड़ी सेवा हो जायेगी, यह हमारा बहोत बड़ा पुण्य करने का साधन हो जाएगा।

उध्धारमूर्त है ना केवल मुक्ति और जीवन मुक्ति कि राह दिखाने वाले है लेकिन हम सभी को दुखो से, अशांति से, परेशानिओं से, समस्याओं से, मुक्त करने वाले भी है। लम्बा काल मुक्त रहने वाली आत्मा ही दुसरो को मुक्ति दे सकेगी। मुक्त करें अपने को। ग्रहस्त में रहने वाले सायद सोचते होंगे कि हम मुक्त कर देंगे तो हमारे परिवार का क्या होगा? सोचता है मनुष्य, माताएं तो सीधा ही सोचती होंगी यह काम अपना नहीं है यह उनका है जो सेंटर्स में रहते है। हम भला कैसे मुक्त हो सकते है? बच्चो कि पालना करनी है, उन्हें पढना, खिलाना, सुलाना उनके सुख दुःख उनकी चिंताएं उनकी टेंसन भी सब करना है तो हम कैसे मुक्त हो सकते है? पर सत्य यह है हम जितने मुक्त होंगे परिवार कि पालना सहज सुंदर रूप से होंगी, हमारे बंधन हमारी शक्तियों को नष्ट करते है जिससे एक छोटे परिवार कि पालना करना भी दुस्कर हो जाता है। हमारी स्थिति श्रेस्ठ बंधन नहीं, हमारी आंतरिक शक्तियां केंद्रित, हमारा मनोबल बढ़ा चढ़ा, हमारे सुंदर विचार, हमारा सुंदर स्वमान हमारे परिवार को श्रेस्ठ स्थिति में रखेगा। देख सकते है आप कितने ब्राम्हण यहाँ सभा में बैठे है **जो ग्रहस्त में रहने वाले है आप देख सकते है ध्यान से देखो सूक्ष्मता से देखो - आपकी जैसी स्थिति आपके परिवार कि वैसी ही स्थिति है।** चेक कर लेना आज जो हम संसार के पूर्वज है उनके आधार मूर्त है तो पहले तो अपने परिवार के आधार मूर्त है ना सब? माँ इन बाचो को जन्म देती है माँ उनकी आधार मूर्त है माँ कि सम्पूर्ण स्थिति बच्चो पर प्रभाव डालती है। **तो यदि हम अपने परिवार को भी सहज भाव से सुख पूर्वक चलाना चाहते है तो हमें अपनी स्थिति पर ध्यान देना है।**

एक और बात पर विचार करना है स्वमान कि बात है हमें बाबा ने स्वमान दिया तुम इष्ट देव हो इष्ट देवियाँ हो। हम

अपने स्वमान को जरा फिल करें । देखिये सब जानते है भारत में कितनी जगह महान तीर्थ बन गए उस स्थान पर स्थित इष्ट देव देवी के कारण, कई मंदिर प्रसिद्द हो गए, हनुमान के बहोत सारे मंदिर आजकल उनके नाम भी अलग अलग रहते है। कहेंगे फलाना जो हनुमान का मंदिर है बड़ा फलदायक है वोह हनुमान, तो वहाँ का हनुमान अलग और यहाँ का हनुमान अलग बहोत सारे हनुमान हो गए है आजकल। तो वोह एक कि बात नही हम सब हनुमान महावीर आत्माओ कि ही बात है। एक पूजनीय मूर्ति से एक स्थान, एक एरिया, एक लम्बी चौड़ा स्टेट, पूरा राज्य पहुचता है उसको तीर्थ स्थान मानकर, कहेंगे इस मंदिर में जाने से विघ्न नष्ट हो जायेंगे, इस मंदिर में जाने से बीमारियां थिक हो जायेगी, इस मंदिर में जाने से भूतप्रेत कि बाधा नष्ट हो जायेगी, इस मंदिर में जाने से पूर्वजो के जो विघ्न चल रहे है वोह समाप्त हो जायेंगे। हम सोचलें हम इष्ट देव देवियाँ है हमारी यादगार से हमारे पत्थरो कि मूर्ति से यह सब कुछ हो रहा है। कितने पंडितो और ब्रह्मणो कि पालना हो रही है, कितने साहूकार हो गए है पंडित लोग, किनसे? और हम लोग? साहूकार है या नहीं? में हंसा करता हूँ मुझे अभी किसी ने सुनाया कि दिल्ही के एक शेठ भी अभी अभी जो साई बाबा कि मूर्ति है ना महाराष्ट्र में जहाँ उसका मूल स्थान है शिर्डी वहाँ पर उसने बताया इतने तोले कि माला हार बनाकर साई बाबा के गले में पहना कर आये है सोने कि। पीछे में गया तो मुझे बता रहे थे मुझे भी ले गए वहाँ में वहाँ भट्ठी में गया था। तो कहा साई बाबा का इतने सोने का सिंहासन बनाया है, इतने हजार टन मेने साई बाबा कि कहानी पढ़ी थी मेने कहा जब साई बाबा था यहाँ तो उस बिचारे को लोग भोजन भी नहीं देते थे, जहाँ वोह चलता था जूते फेंकते थे उसके ऊपर, कंकड़ फेंकते थे भूखा रहा, हिन्दू कहते थे यह मुसलमानो का है, मुसलमान कहते थे यह हिन्दुओ का है और मरने के बाद? तो देखिये जब वोह जिन्दा था तो भोजन भी नहीं और जब वोह मर गया तो उसके नाम से अनेक लोग भोजन खा रहे है। अनेक परिवार पल रहे है, कितने लोग साहूकार हो गए है, कितनी चोरो कि भी नजर होगी सोना बहोत है कुछ करलें।

हम सब भी याद करें **हम इष्ट देव देवियाँ है**, अपने स्वरुप में यदि हम रहने लगे माताएं यदि अपने परिवार में इस स्वमान में यदि रहने लगे में इष्ट देवी हूँ तो क्या होगा? बोलो क्या होगा? आपका घर मंदिर बन जाएगा, आपको यह कहना नहीं पड़ेगा कि हमारा सारा परिवार ज्ञान में कैसे आये? आपको यह सोचना नहीं पड़ेगा हमें बहोत बंधन है लोग ज्ञान में चलने नहीं देते, हमारी लिए यह सहयोगी नहीं है। **इष्ट देवियों का कोई विरोध करें यह हो हि नहीं सकता, सभी कि समस्यायों का हल है यह। आपके परिवारों कि जो भी समस्या है इसको आप इस स्वमान में स्थित होकर हल करें, में एक इष्ट देवी हूँ।** माताएं सिखले हम इष्ट देवियाँ है जैसे ही यह स्वरुप प्रगट होता जाएगा और इस स्वरुप में रहने से हमसे जो वाइब्रेशन्स फैलेंगे उससे सभी खिंच खिंच कर बाबा के पास आजायेंगे। आपको याद हो अभी अभी कि मुरलियों में साकार मुरली में भी पिछले पंद्रह दिनों कि मुरली में यह बात आ चुकी है पवित्रता और योग कि शक्ति से तुम्हारे पास आत्माएं खिंच खिंच कर आती रहेगी, यह दोनों आधार है सेवा कि वृद्धि के। हमें सेवाओं में कुछ भी ज्यादा भागदौड़ नहीं करनी पड़ेगी, सेवाएं सहज निर्विघ्न भी हो जायेगी अगर हमारे पास यह दोनों बल बढ़ते चलें। सब जानते है पवित्रता कोई एक दिन कि बात नहीं है इसके लिए हमें लम्बी साधनाएं करनी है, योग को बढ़ाने के लिए भी हमें लम्बी साधनाएं करनी है, तपस्या करनी है और हम उस और चलें, विघ्नो का असली कारण अपवित्रता ही है। सब समज लें इस बात को **चाहे वोह परिवार पर विघ्न आ रहे हो, चाहे वोह व्यक्तिगत जीवन पर विघ्न आ रहे हो, चाहे कहीं हमारी सेवाओं में विघ्न आ रहे हो हम अपनी पवित्रता को थिक करें तो विघ्न स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे।** पवित्रता का विशाल अर्थ भी है कई लोग सोचते है हमने तो ब्रह्मचर्य अपना लिया, हमने तो कोई भूल नहीं कि जीवन भर, हमारे संकल्प भी बिलकुल शुद्ध होते जा रहे है लेकिन मन में यदि घृणा है, मन में यदि स्वार्थ है, पवित्र आत्मा होते हुए भी यदि हम दूसरे को सुख ना देकर दुःख देते है, यदि हमारी भावनाएं शुद्ध नहीं हुई है, हम शुभ भावना कि बजाएं

दुसरो से बदले कि भावना रखते है तो हमारी प्यूरिटी कि शक्ति नष्ट हो जाती है। कितना भी अच्छा ब्रमचर्य का पालन करने वाली आत्मा यदि उसके पास यह सब है तो समज लें उसके पास पवित्रता तो है पर पवित्रता का बल नहीं है। इसलिए विघ्न बहोत आयेंगे।

तो हम अपने को बहोत मजबूत करें। अब फिरसे बाबा हमारे सामने होंगा कितने दिन रेह गए? एक हफ्ता रेह गया है, एक हफ्ते में हम सभी अच्छी तैयारी करेंगे बाबा से मिलने कि हमारे ही जन्म दिन पर बाबा आएगा या हम उसके जन्म दिन पर जायेंगे? दोनों बात होंगी। बाबा अपना झंडा लहरायेगा, जब पहली बार बाबा ने अपना झंडा लहराया मुझे याद रहता है वोह सीन ओम शांति भवन बना बना था बाबा आये और शिवरात्रि पर बाबा ने अपना झंडा लहराया पहली बार बड़ा आकर्षक दृस्य था मन पर छा गया। कई रात जब में सोता था तो मुझे वोह सीन एमर्ज होता था भगवान् को देखा अपना झंडा लहराते हुए। हम सब भी इन स्मृतियों को अपनी यादगार बना लें सभी सोचें इस सुंदर अंतिम जीवनमें सुंदर जीवन है यह, लगता है सब को सुंदर या नहीं? सुंदर लगता है भाइयों को? या बिना मतलब कि परेशानियां बहोत है जीवन में? फिर भी सुंदर है। परेशानियां तो सारे संसार में है लेकिन हमारे साथ क्या है? हमारे जीवन कि यात्रा पर भगवान् भी हमारा साथी बन गया है।

मुझे जब कोई दिखाता है कि फलाने महापुरुष ने अपनी जीवन कहानी लिखी है तो में सोचता हूँ यदि हम सब अपनी जीवन कहानी लिखें तो सभी एक बात तो लिखेंगे ना कि जब हम बीस साल के हुए जब हम तिस साल के हुए तो हमारी जीवन कि यात्रा में कौन सामिल हो गया? स्वयं भगवान् और उसके बाद क्या क्या हुआ। यदि सभी अपनी जीवन कहानी लिखेंगे तो लिखने में ही आनंद आजायेगा। इस जीवन में इन आँखों से क्या क्या देखा है सुंदर एक सूक्ष्म ख़ुशी और एक अतीन्द्रिय सुख कि अनुभूति होने लगेगी। **विचार करें भगवान् को देखने के बाद कुछ भी देखना बाकि नहीं रेह जाता, उसको पाने के बाद कुछ भी पाना बाकी नहीं रेह जाता।** पर यहाँ तो बहोत कुछ पाना बाकी है मन नहीं मानता कि तुम्हे पाने के बाद और कुछ पाना शेष नहीं रेह जाता लेकिन **इसका अर्थ है कि उसे पाने के बाद मन सांसारिक घटनाओ के पीछे नहीं भटकता, उसे संतोष प्राप्त हो जाता है, एक बहोत बड़ी इन्तेजार समाप्त हो जाती है, एक बहोत लम्बे काल कि प्यास बुझ जाती है ऐसी सुंदर प्राप्ति हम सब को हुई है ।**

तो बाबा फिरसे हमारे सामने आयेंगे और हम बाबा के कहे अनुसार कुछ स्वमान का अभ्यास करेंगे। में आपको पांच स्वमान दे देना चाहता हूँ आप चाहे रोज पांचो का अभ्यास करें या एक एक का अभ्यास करें यह स्वमान हमारे जीवन को महान बना देते है, दिव्य बना देते है इससे स्थिति बहोत श्रेस्ठ हो जायेगी और आपको परमातम मिलन का बहोत सुख अनुभव होगा।

1. पहला स्वमान में एक महान आत्मा हूँ, शब्द ही कितने सुंदर है स्वीकार करेंगे में महान हूँ है ना सभी महान या नहीं? जिन्होंने भगवान् को इस धरा पर उतरते हुए देखा है वोह महान हो गए ना? जो संसार के कल्याण के बारें में सोचते है, काम कर रहे है, जो दुसरो को भी भगवान् से मिला देते है, जो मनुष्य को देवता बनाने का पाठ पढ़ा देते है वोह महान हुए ना? हम महान है इसका नशा हो जाए हमें।
2. दूसरा स्वमान - में इष्ट देव-इष्ट देवी हूँ।
3. तीसरा स्वमान - में विजयी रत्न हूँ।
4. चौथा स्वमान - में पूर्वज हूँ, आधार पूर्वज।
5. पांचवा स्वमान - में फरिश्ता हूँ।

में अवतरित हुआ हूँ इस धरा पर शांति स्थापना के लिए तो संसार कि अशांति मुझ में नहीं आ सकती मेरी शांति संसार में जाएंगी ऐसा अपने को स्वमान दे दें नशा दे दें। इनका अभ्यास बहोत अच्छी तरह करते रहेंगे। में आप सभी को एक दूसरी बात भी याद दिला दे ना चाहता हूँ जो मुझे तो बहोत प्रिय है आप सब को भी बहोत प्रिय है सब उसका बहोत अभ्यास करेंगे उसके अनुभवो को भी अथॉरिटी बनेंगे। बाबा ने कहा ना कि हर बात कि अनुभवो कि अथॉरिटी बन जाएँ और वोह है **भगवान् के बच्चे बुलाएं और बाप ना आयें यह हो नहीं सकता।** हम बाबा को बुलाया करें। भोजन पे बुलाएं, घर से बहार चलते है तब बुलाएं, कार्य में बुलाएं। बुलाएं बाबा को भूलें नहीं भोजन खा रहे है शुरू में बुलालें मानलो भूल गया हो तो बुला लें यह नहीं कि अब नहीं बुलाना है, एक मिनट हो गया भोजन खाते भूल गया अब नहीं बुलाएँगे फिर बुला लोन बाबा को बाबा हम तो भूल गए आजाओ, कोई बात नहीं बाबा फिर आजायेगा। इसके अनुभव करके देखें। क्या सुंदरता है भगवान् हमारे साथ रहने लगे तो क्या क्या होता है जीवन कि समस्याएं कैसे लोप होती है, हमारा जीवन निर्विघ्न कैसे रहता है, हमारी सफलता और विजय कैसे प्राप्त होती है, जीवन कैसे सहज बनता है हजार भुजाओ वाला हमारे साथ रहे तो हमारे कार्य कितनी जल्दी पुरे होते है यह सब अच्छी तरह अनुभव करना है। पसंद है? माताओ को तो यह बात बहोत प्रिय होनी ही चाहिए है या नहीं? टीचर बहने बैठी है कहीं आपको भासण करना हो कुछ परेशानी कि बात नहीं केह दो आजाओ, ज्ञान के सागर आजाओ भाषण करना है देखो क्या होता है फिर।

एक बात पर हम थोडा सा विचार करेंगे पांच मिनट बाबा दो बार केह आये है अभी अभी बाबा ने कहा **तुम योगी जीवन वाले हो और जीवन दो चार घंटे कि नहीं होते जीवन माना जीवन। तो तुम्हारा योग भी ऐसा ही हो जैसे तुम्हारा जीवन है दो चार घंटे का नही**। तो बहोत अच्छी बात केह रहे है बाबा जैसे अमृतवेले बहोत अच्छी स्थिति, किसी कि पावरफुल स्थिति रहती है वैसे स्थिति कर्मयोग में भी हो। इससे हमें ज्यादा फायदे होंगे। यह अलग बड़ा विषय है कि कर्म करते हुए हम पावरफुल योग अभ्यास में कैसे रहे पर पहले हम इसका महत्व समज लें अगर कर्म करते हम बहोत अच्छा योग का अभ्यास करते होंगे तो कर्म का इफ़ेक्ट हम पर नहीं आएगा। कर्म हमें प्रभावित नहीं करेगा, कर्म हमें बांधेंगे नहीं, कर्म हमें उलझाएगा नहीं सहज भाव से कर्म होंगे क्यूंकि कर्म करते बाबा को याद करना माना परमातम शक्तियां भी हमारे साथ काम करेगी यह बाबा केह आये है तुम अकेले काम करो या परमातम शक्तियों के साथ काम करो कितना सुंदर होगा।

अब बात है **हमें पावरफुल योग करना है इसके लिए हमारे अंदर बहोत धारणाओ कि आवश्यकता है ताकि हम कर्म कस्किओउस ना हो जाएँ, कर्म हमें अपने बंधन में ना बांध लें, अभी यह काम करना है, अभी यह काम करना है जल्दी करना है सब कुछ भूल जाएँ।** दो अभ्यास एक तो स्वमान के अभ्यास हमें कर्म करते हुए करने ही चाहिए परन्तु यदि हम पावरफुल योग करना चाहते है यह भी योग है कि हम कर्म करते बाबा को अपने पास बुलालें हजार भुजाओ सहित आजाओ यह भी बहोत अच्छी स्थिति है लेकिन पावरफुल स्थिति किसे बाबा कहते है कि कर्म हम हाथ से कर रहे हो और बुद्धि बाब के स्वरुप पर स्थिर हो। जैसे हम नैनो से उसे देख रहे है यहाँ कर्म कर रहे है। इसके लिए बहोत अच्छे अभ्यास कि जरुरत है बुद्धि रुपी नेत्र को यहाँ से निकाल कर ऊपर लगाये रखना इसमें थोड़ी तपस्या कि आवश्यकता है इसको और सरल हम कर सकते है यहाँ हम कर्म कर रहे हो और इस फिलिंग में रहे कि ऊपर से बाबा कि किरणे हम पर पड़ रही है अभ्यास से यह भी सम्भव है। तीसरा अभ्यास हम अपने को ऐसी स्थिति में स्थित कर दें कि कर्म हम यहाँ कर रहे हो और अभ्यास करें मेरे सर के ऊपर सर्व शक्तिवान कि छत्र छाया है उसे देखते रहे सर के ऊपर सर्व शक्तिवान छत्र है निचे हम कर्म कर रहे है।

ऐसे अलग अलग अभ्यास करते हुए हम अपने योग को पावरफुल बनाएंगे। जो भी आपमे से यह कर सकें वोह यह भी करें यह ना हो तो स्वमान का अभ्यास और बाबा का आहवाहन यह तो सब को करना ही है यह करते रहने से धीरे धीरे

योग पावरफुल भी हो जाएगा।

-: ओम शांति :-

-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-

- ✓ जो बच्चे सुखदाई है वोह मेरे प्यार के पात्र है, जो जितने देह से न्यारे वोह उतना ही परमातम प्यार के पात्र है।
- ✓ संकल्प किया स्वमान और वरदान का और एक सेकंड में उसके स्वरुप बन गए यह है उन आत्माओ कि निशानी जिन्होंने अपने को तैयार कर लिया है ।
- ✓ जब तक तुमने सभी आत्माओ को दुखो से मुक्त नहीं किया तुम मुक्तिधाम नहीं जा सकोगे। अपने कर्तव्य पूर्ण किये बिना हम वहाँ नहीं जा सकेंगे। ऐसे में हम सब को रेडी होना है संसार को बहोत कुछ देने के लिए और दे वही सकेंगे जो सभी खजानो से भरपूर हो।
- ✓ बाबा ने हर एक अपने बच्चे को वरदान दिया है उस वरदान को हमें फलीभूत करना है कौनसा वरदान किसके लिए वरदान बन गया है यह इस बात पर निर्भर करेगा के किस वरदान को हम अपने लिए वरदान स्वीकार करलें।
- ✓ बाबा ऐसे कहते थे तुम्हारे ज्ञान कि शुरुआत भी इसी से हुई कि में कौन हूँ? और ज्ञान कि समाप्ति भी इसी से होगी कि में कौन? शुरुआत हुई में आत्मा हूँ शरीर नहीं हूँ, शरीर से अलग हूँ अंत होगा में कौनसी आत्मा हूँ?
- ✓ परमातम प्यार को समज कर यदि हम उसके प्यार का सही उतर देंगे तो उसका ना केवल प्यार बढ़ता जाएगा लेकिन अनेक शक्तियां और वरदान भी हमारे पास आजायेंगे।
- ✓ तुम विश्व के आधारमूर्त और उध्धारमूर्त हो। तुम्हे विश्व का उध्धार करना है आत्माओ का उध्धार करना है, प्रकृति का भी कल्याण करना है, जिव जंतु पशु पक्षी सब का कल्याण तुम्हे करना है।
- ✓ हम विश्व के आधार है हमें याद रखना है हमारी स्थिति ही विश्व कि स्थिति बनेगी हम हसेंगे तो? जग हसेगा, हम उदास हो गए तो? जैसा कर्म तुम करोगे तुम्हे देख कर और भी करेंगे।
- ✓ जो ग्रहस्त में रहने वाले है आप देख सकते है ध्यान से देखो सूक्ष्मता से देखो - आपकी जैसी स्थिति आपके परिवार कि वैसी ही स्थिति है। तो यदि हम अपने परिवार को भी सहज भाव से सुख पूर्वक चलाना चाहते है तो हमें अपनी स्थिति पर ध्यान देना है।
- ✓ इष्ट देवियों का कोई विरोध करें यह हो हि नहीं सकता, सभी कि समस्यायों का हल है यह। आपके परिवारों कि जो भी समस्या है इसको आप इस स्वमान में स्थित होकर हल करें, में एक इष्ट देवी हूँ।
- ✓ चाहे वोह परिवार पर विघ्न आ रहे हो, चाहे वोह व्यक्तिगत जीवन पर विघ्न आ रहे हो, चाहे कहीं हमारी सेवाओं में विघ्न आ रहे हो हम अपनी पवित्रता को थिक करें तो विघ्न स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे।
- ✓ विचार करें भगवान् को देखने के बाद कुछ भी देखना बाकि नहीं रेह जाता, उसको पाने के बाद कुछ भी पाना बाकी नहीं रेह जाता। इसका अर्थ है कि उसे पाने के बाद मन सांसारिक घटनाओ के पीछे नहीं भटकता, उसे संतोष प्राप्त हो जाता है, एक बहोत बड़ी इन्तेजार समाप्त हो जाती है, एक बहोत लम्बे काल कि प्यास बुझ जाती है।
- ✓ भगवान् के बच्चे बुलाएं और बाप ना आयें यह हो नहीं सकता।

- ✓ तुम योगी जीवन वाले हो और जीवन दो चार घंटे कि नहीं होते जीवन माना जीवन। तो तुम्हारा योग भी ऐसा ही हो जैसे तुम्हारा जीवन है दो चार घंटे का नही।
- ✓ हमें पावरफुल योग करना है इसके लिए हमारे अंदर बहोत धारणाओ कि आवश्यकता है ताकि हम कर्म कस्किओउस ना हो जाएँ, कर्म हमें अपने बंधन में ना बांध लें, अभी यह काम करना है, अभी यह काम करना है जल्दी करना है सब कुछ भूल जाएँ।